

## चतुर खरगोश और शेर

किसी घने वन में एक बहुत बड़ा शेर रहता था। वह रोज शिकार पर निकलता और एक ही नहीं, दो नहीं, कई-कई जानवरों का काम तमाम कर देता। जंगल के जानवर डरने लगे कि अगर शेर इसी तरह शिकार करता रहा तो एक दिन ऐसा आयेगा कि जंगल में कोई भी जानवर नहीं बचेगा।

सारे जंगल में सनसनी फैल गई। शेर को रोकने के लिये कोई न कोई उपाय करना ज़रूरी था। एक दिन जंगल के सारे जानवर इकट्ठा हुए और इस प्रश्न पर विचार करने लगे। अन्त में उन्होंने तय किया कि वे सब शेर के पास जाकर उनसे इस बारे में बात करें। दूसरे दिन जानवरों के एक दल शेर के पास पहुंचा। उनके अपनी ओर आते देख शेर घबरा गया और उसने गरजकर पूछा, "क्या बात है, तुम सब यहां क्यों आ रहे हो?"

जानवर दल के नेता ने कहा, "महाराज, हम आपके पास निवेदन करने आये हैं। आप राजा हैं और हम आपकी प्रजा। जब आप शिकार करने निकलते हैं तो बहुत जानवर मार डालते हैं। आप सबको खा भी नहीं पाते। इस तरह से हमारी संख्या कम होती जा रही है। अगर ऐसा ही होता रहा तो कुछ ही दिनों में जंगल में आपके सिवाय और कोई भी नहीं बचेगा। प्रजा के बिना राजा भी कैसे रह सकता है? यदि हम सभी मर जायेंगे तो आप भी राजा नहीं रहेंगे। हम चाहते हैं कि आप सदा हमारे राजा बने रहे। आपसे हमारी विनती है कि आप अपने घर पर ही रहा करे। हर रोज स्वयं आपके खाने के लिए एक जानवर भेज दिया करेंगे। इस तरह से राजा और प्रजा दोनों ही चैन से रह सकेंगे।"

शेर को लगा कि जानवरों की बात में सच्चाई है। उसने पलभर सोचा, फिर बोला अच्छी बात है। मैं तुम्हारे सुझाव को मान लेता हूँ। लेकिन याद रखना, अगर किसी भी दिन तुमने मेरे खाने के लिये पूरा भोजन नहीं भेजा तो मैं जितने जानवर चाहूंगा, मार डालूंगा। जानवरों के पास तो और कोई चारा नहीं। इसलिये उन्होंने शेर की शर्त मान ली और अपने-अपने घर चले गये।

उस दिन से हर रोज शेर के खाने के लिये एक जानवर भेजा जाने लगा। इसके लिये जंगल में रहने वाले सब जानवरों में से एक-एक जानवर, बारी-बारी से चुना जाता था। कुछ दिन बाद खरगोशों की बारी भी आ गई। शेर के भोजन के लिये एक नन्हे से खरगोश को चुना गया। वह खरगोश जितना छोटा था, उतना ही चतुर भी था। उसने सोचा, बेकार में शेर के हाथों मरना मूर्खता है। अपनी जान बचाने का कोई न कोई उपाय अवश्य करना चाहिये, और हो सके तो कोई ऐसी तरकीब ढूँढनी चाहिये जिसे सभी को इस मुसीबत से सदा के लिए छुटकारा मिल जाये। आखिर उसने एक तरकीब निकाली।

खरगोश धीरे-धीरे आराम से शेर के घर की ओर चल पड़ा। जब वह शेर के पास पहुँचा तो बहुत देर हो चुकी थी।

भूख के मारे शेर का बुरा हाल हो रहा था। जब उसने सिर्फ एक छोटे से खरगोश को अपनी ओर आते देखा तो गुस्से से बौखला उठा और गरजकर बोला, "किसने तुम्हें भेजा है? एक तो पिद्दी जैसे हो, दूसरे इतनी देर से आ रहे हो। जिन बेवकूफों ने तुम्हें भेजा है मैं उन सबको ठीक करूँगा। एक-एक का काम तमाम न किया तो मेरा नाम भी शेर नहीं।"

नन्हे खरगोश ने आदर से ज़मीन तक झुककर, "महारा, अगर आप कृपा करके मेरी बात सुन लें तो मुझे या और जानवरों को दोष नहीं देंगे। वे तो जानते थे कि एक छोटा सा खरगोश आपके भोजन के लिए पूरा नहीं पड़ेगा, 'इसलिए उन्होंने छह खरगोश भेजे थे। लेकिन रास्ते में हमें एक और शेर मिल गया। उसने पाँच खरगोशों को मारकर खा लिया।'"

यह सुनते ही शेर दहाड़कर बोला, "क्या कहा? दूसरा शेर? कौन है वह? तुमने उसे कहाँ देखा?"

"महारा, वह तो बहुत ही बड़ा शेर है", खरगोश ने कहा, "वह ज़मीन के अन्दर बनी एक बड़ी गुफा में से निकला था। वह तो मुझे ही मारने जा रहा था। पर मैंने उससे कहा, 'सरकार', आपको पता नहीं कि आपने क्या अन्धेर कर दिया है। हम सब अपने महाराज के भोजन के लिये जा रहे थे, लेकिन आपने उनका सारा खाना

खा लिया है। हमारे महाराज ऐसी बातें सहन नहीं करेंगे। वे ज़रूर ही यहाँ आकर आपको मार डालेंगे।”

“इस पर उसने पूछा, 'कौन है तुम्हारा राजा?' मैंने जवाब दिया, 'हमारा राजा जंगल का सबसे बड़ा शेर है।’

“महाराज, 'मेरे ऐसा कहते ही वह गुस्से से लाल-पीला होकर बोला बेवकूफ इस जंगल का राजा सिर्फ मैं हूँ। यहाँ सब जानवर मेरी प्रजा हैं। मैं उनके साथ जैसा चाहूँ वैसा कर सकता हूँ। जिस मूर्ख को तुम अपना राजा कहते हो उस चोर को मेरे सामने हाजिर करो। मैं उसे बताऊँगा कि असली राजा कौन है, महाराज इतना कहकर उस शेर ने आपको लिवाने के लिए मुझे यहाँ भेजा है।”

खरगोश की बात सुनकर शेर को बड़ा गुस्सा आया और वह बार-बार गरजने लगा। उसकी भयानक गरज से सारा जंगल दहलने लगा मुझे फौरन उस मूर्ख का पता बताओ”, शेर ने दहाड़कर कहा, "जब तक मैं उसे जान से नहीं मार दूँगा मुझे चैन नहीं मिलेगा"। 'बहुत अच्छा महाराज', खरगोश ने कहा, "मौत ही उस दुष्ट की सज़ा है। अगर मैं और बड़ा और मज़बूत होता तो मैं खुद ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता।”

"चलो, रास्ता दिखाओ," शेर ने कहा, "फौरन बताओ किधर चलना है?"

"इधर आइये महाराज, इधर", खरगोश रास्ता दिखाते हुआ शेर को एक कुएँ के पास ले गया और बोला, "महाराज, वह दुष्ट शेर ज़मीन के नीचे किले में रहता है। जरा सावधान रहियेगा। किले में छुपा दुश्मन खतरनाक होता है।”

"मैं उससे निपट लूँगा," शेर ने कहा, "तुम यह बताओ कि वह है कहाँ ?"

“पहले जब मैंने उसे देखा था तब तो वह यही बाहर खड़ा था। लगता है आपको आता देखकर वह किले में घुस गया। आइये मैं आपको दिखाता हूँ।”

खरगोश ने कुएँ के नजदीक आकर शेर से अन्दर झाँकने के लिये कहा। शेर ने कुएँ के अन्दर झाँका तो उसे कुएँ के पानी में अपनी परछाई दिखाई दी।

परछाई को देखकर शेर जोर से दहाड़ा। कुएँ के अन्दर से आती हुई अपने ही

दहाडने की गूंज सुनकर उसने समझा कि दूसरा शेर भी दहाड रहा है। दुश्मन को तुरंत मार डालने के इरादे से वह फौरन कुएं में कूद पड़ा। कूदते ही पहले तो वह कुएं की दीवार से टकराया फिर धडाम से पानी में गिरा और डूबकर मर गया। इस तरह चतुराई से शेर से छुट्टी पाकर नन्हा खरगोश घर लौटा। उसने जंगल के जानवरों को शेर के मारे जाने की कहानी सुनाई। दुश्मन के मारे जाने की खबर से सारे जंगल में खुशी फैल गई। जंगल के सभी जानवर खरगोश की जय-जयकार करने लगे।

सीख : घोर संकट की परिस्थितियों में भी हमें सूझ बूझ और चतुराई से काम लेना चाहिए और आखिरी दम तक प्रयास करना चाहिए। सूझ बूझ और चतुराई से काम लेकर हम भयंकर संकट से उबर सकते हैं और बड़े से बड़े शक्तिशाली शत्रु को भी पराजित कर सकते हैं।

## पउरु अपरगमै उर मरै

किभी अनवेन भएक गुरु गुरु मरै गुरुत घा वरु रए मिकार पर निकलउ उर एक की नकी, एनेकी, करै-करै एनवर के काम उभाभ कर एउे। एंगल क एनवर उरन लेग कि मगर मरै उभी उरु मिकार करउ ररु उरक दिन रिभा मुषगो कि एंगल भ करै की एनवर नकी गउगो।

भार एंगल भमेनभनी छलै गरै। मरै करैकेन के लिख करै न करै उपाय करन एरुी घा। एक दिन एंगल क भार एनवर उकएरुए उर उम पुपुपर विचार करन लेगा मिन, उनेने उेव किवा कि वभम मरै क पोम एकर उम उम मर भेगउ कर एउमर दिन एनवर के एक छल मरै क पोम पकंगु। उनक मेषनी उर मुउ एपि मरै अमरा गवा उर उमन गेर एकर पछा, "रु गउ रु, उेमु भम वरु कृमु ररु के?"

एनवर छल क नेउे न केरु, "भरुगरु, रुम मुपक पोम निवदन करन मुष को मुप गरु रु उर रुम मुपकी पूर। एम मुप मिकार करन निकलउ रु उेरेरु एनवर भार उरु उरु मुप मरुकोपा की नकी पाउ उम उरु मरुभारी मांपु कभ रुठी ए रकी कृमिगर रिभा की रुउे ररु उ केरु की दिन भेएंगल भ मुपक भिवथ उर करै की नकी गउगो। पूर क गिन गरु की कर्म ररु मरुउ रु? यमि रुम मरी भर एवगे उे मुप की गरु नकी ररुगो रुम उरु उरु रुकै मुप मरु रुभार गरु रुन रे रुमुपम रुभारी विनडी रुकै मुप मुपन अर पर की ररु करु रुरु ए मरु मुपक पोम के लिए एक एनवर रुए रिवा करगो उम उरु मरुए उर पूर एने की उने मरु मरुगो।"

मरै क लेगा कि एनवर की गउ भमेरुगु क उमन पेलरु मरु, उरि गले मरुी गउ रु भे उमुगु मरुगव क भान लउे रु लकिन वा र रापन, मगर किभी की दिन उमुन भेरु पोम के लिख पुग रुएन नकी रुए उ भेरु उन एनवर उरुगु, भार उरुगु। एनवर के पोम उ उर करै उरुगु नकी। उम लिख उनेने मरै की मरुभान ली उर मुपन-मुपन अर उल गेवा।

उम दिन मरुए रए मरै क पोम के लिख एक एनवर रुए एन लेगा। उमक लिख एंगल भ ररुन वेल मरु एनवर भेभे एक एक एनवर, मरी-मरी मरुगु एउ घा। रुकु दिन मरु अपरगमै की मरी की मु गरै। मरै क रुएन क लिख एक ननुभे अपरगमै क उरुगु गवा। वरु अपरगमै एउन रुए घा, उउन की उरु की घा। उमन मरुगो, मरुए भमेरु क रुव भेरुन भरुउ रु मुपनी एन गउगुन के करै न करै उपाय मुवमरुकरन उरु विथ, उर रुभेक उे करै रिभी उर की ग उरुनी उरु विथ एम मरु की क उम भुीगउ मरुए क लिए रुकरुगु भिल एवा मुीपर उमन एक उर की ग निकली।

अपरगमै पीर-पीर मरुगु भमेरु क अर की उर उल पछा। एम वरु मरै क पोम पकंगु उेरेरु उरु रु उरुकी घी।

रुए क भार मरै क मरु काल रुरेरु घा। एम उमन भिरुगु क रुए मरु अपरगमै क मेषनी उर मुउ एपि उे मुमुगु मीपल उर उर गरुएकर गले, "किभन उेमु रुए रु? एक उे पिन्नी एमै रु, एमर उेउनी उरु मरु ररु रु एिन गव रु उेमु रुए रु भे उेन मरु क रीक करगु। एक एक क काम उभाभ न किवा उे भेरु नभ की मरै नकी।"

ननुअपरगमै न मुए मरु भीन उक एरुकर, "भरुगरु, मगर मुप रुपु करु क भेरु गउ मरु ल उे भुए वा उर एनवर के उे नकी उरु व उे एनउ घ कि एक रुए भा अपरगमै मुपक रुएन क लिए पुग नकी पछुगो, उम लिए उनेने रुए अपरगमै रुए घालकिन गभ, उेभेभे एक उर मरै भिल गवा। उमन पोम अपरगमै के भार करु पा लिवा।"

वह मजदूरी मरी टका टकर ग्लो, "कह कला? टमरा मरी? कौन रु वैरु? उभन उम केलां टपिा?"

"भकारा, वरु उवेरुडु की गरा मरी कौ, अपरगमे न केला, "वरु एभीन क मेनरु गनी एक गरी गल्ला भमे निकला था। वरु उ भेपु की भारन ए रका था। पर भने उमम केला, 'भरकार', मुपक पउ नकी कि मुपन के मुनरु कर दिया कौकेमभम मुपन भेकाराए क हरेन क लिय ए ररु घे, लकिन मुपन उनका भारा पाना पाना लिय कौकेभार भेकाराए एभी गउ भरुन नकी करगोवे एररु की वरु मुकर मुपक भार टालगो।"

"उम पर उमन पेला, 'कौन रु उभेदुग राए?' भने एवग दिया, 'रभारा राए एंगल का भमभ गरा मरी कौ"

"भकाराए, 'भने एभा करुडु की वरु गमुमे लाल-पीला रुकेर ग्लो गवेरुडु उम एंगल का राए भिगुमे कौ, वरु भम एनवर भरी पर कौके उमक मोघ एमो टाक वमो कर मकउ कौ एमिभ भल्ल क उेमु मुपन राए करुडु क उेमु एरे क भेरे भभन कौएर कर भे उेम गेउ उंग कि मुभली राए कौन रु, भेकाराए उउन करुकर उम मरी न मुपक लिवन के लिए भु घेला हरे कौ। अपरगमे की गउ मजकर मरी क वेरा गमुमु घा टार वरु गरा-गर गरएन लेगा। उमकी हयनक गरए मभारा एंगल टरुलन लेगा भु टेरन उम भल्ल का पउ गउाउ", मरी न टका टकर कला, "एग उक भ उेम एन मनेकी भार टगी भु एने नकी भिलगो।" 'गुरुडु मुपु भकाराए', अपरगमे न केला, "भेउ की उम टपुकी मर कौभेगर भटार गरा टार भएगुडु रुउे उ भेपिा की उमक टकर-टकर केर टउे।"

"एल, गभु टिापाउ," मरी न केला, "टेरन गउाउ किणर एलन कौ?"

"उपर मुडव भेकाराए, उपर", अपरगमे गभु टिापाउ रुमु मरी कौ एक कुरा के पोभ ल गेघा टार ग्लो, "भकाराए, वरु टपुमरी एभीन क नीण किल भेरेरुडु कौएरा भावणन रदियगो। किल भकेप टपुन अपरनक रुउे कौ"

"भ उेमभ निपए लगी, "मरी न केला, "उमु वरु गउाउ कि वरु रु केला?"

"परुल एग भने उम टपिा था उग उ वेरु वकी गकर अपरा था। लगउ रु मुपक मुउ टपिकर वरु किल भेपुम गघा। मुडव भेमुपक टिापाउ कौ?"

अपरगमे न केला क नेएमीक मुकर मरी भ मेनरु टांकन के लिय केला। मरी न केला क मेनरु टांका उ उेम केला क पोनी भमेपनी परकार टिापर टिी।

परकार क टपिकर मरी एरे म टेकरा टा कुरा क मेनरु भ मुेडी रुं मुपन की टका टन की गल्ल मजकर उमन भेभारा कि टमरा मरी छी टका ट रका कौ टपुन क उेरुउे भार टालन के टरा ट मे वरु टेरन कुरा भकेलु परा।

कुरुडु की परुल उे वेरु कुरा की टिवार भएकराघ टिर एरुभ मपोनी भगिरा टार रुकुकर भर गघा। उम उररु एउरुरं भ मेरे भ केपुपाकर नरु। अपरगमे अर लेण। उमन एंगल क एनवर के मरी क भार एन की कला नी मजरां। टपुन क भार एन की अपर मभारा एंगल भपिमी टले गरं। एंगल क मेरी एनवर अपरगमे की एव-एवकार करन लेगा।

भीप : अरे मंके की परिभिटिव भे छी रुभमेप गुरा टार एउरुरं भ केभलने टा टिा टार मुीपरी टभ उक प्थम करन टा टिा। भु गुरा टार एउरुरं भ केभलकेर रुभ रुवंकर मंके भ उेग मकउ क टार गुरु मे गुरु मे क्किाली मउू क छी पराएउ कर मकउ कौ।

